उजड़े वनों को नया जीवन कैसे मिले?

भारत डोगरा

हमारे देश में एक बड़ा वन-क्षेत्र ऐसा है जो विभिन्न कारणों से बुरी तरह उजड़ चुका है। यदि समय रहते ऐसे वनों के ह्रास को रोकने का प्रयास नहीं किया गया तो कुछ वर्षों में इन वनों का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा।

अच्छी खबर यह है कि ऐसे अनेक वनों को सामूहिक प्रयास कर नया जीवन दिया जा सकता है। यदि मिट्टी की ऊपरी उपजाऊ परत बची हुई है तो अनुकूल परिस्थितियां मिलने पर वन में फिर से हरियाली प्राप्त करने की क्षमता भी है। सवाल है कि अनुकूल स्थितियां किस तरह उपलब्ध करवाई जाए।

अनेक स्थानों पर गांववासियों ने आपसी सहयोग से ऐसे प्रयास किए हैं कि वन के एक क्षेत्र में बाड़ लगाकर या चौकीदार रखकर वहां कुछ समय के लिए पशुओं के चरने पर रोक लगा दी। वन के अन्य क्षेत्र में पशु पहले की तरह चरते रहे। जो वन-क्षेत्र पहले सुरक्षित किया गया था, वहां जब हरियाली लौटने लगी तो धीरे-धीरे वहां प्रतिबंध हटा दिए व दूसरे स्थान पर लगा दिए। इस तरह कुछ वर्षों में बारी-बारी से वन के सभी हिस्सों को कुछ 'आराम' का समय दिया गया जिससे उस क्षेत्र की हरियाली लौट सके।

उत्तराखंड के टिहरी गढ़वाल ज़िले में कुछ वर्ष पहले जडधार के उजड़ते वन को पुनः हरियाली प्राप्त करने का ऐसा ही अवसर गांववासियों ने दिया। इससे न केवल वन की हरियाली लौटी अपितु ऐसे वन्य जीव भी फिर नज़र आने लगे जो पहले यहां से लुप्त हुए मान लिए गए थे। कुछ ऐसे ही प्रयास यहां 'चिपको आंदोलन' के क्षेत्र के कुछ अन्य गांवों में भी किए गए।

वनों को नया जीवन देने के एक अनोखे उपाय का समाचार कुछ समय पहले उत्तरप्रदेश के सोनभद्र ज़िले से मिला। यह प्रयास विशेषकर उन वनों के लिए अनुकरणीय है जहां वृक्षों का व्यापारिक कटान तो हुआ है पर इन वृक्षों का कुछ हिस्सा (ठूंठ) बचा हुआ है। यहां नगवा पंचायत के आदिवासियों ने कटान के क्षेत्र के वन को नवजीवन देने के लिए समितियों का गठन किया। जितने भी पेड़ कटे थे, उनके कल्ले निकालने के लिए मई व जून माह में स्थानीय स्तर पर मिलने वाली जड़ी-बूटियों का लेप लगाकर बोरों से बांध दिया गया। पूरे चार माह तक बोरे बंधे रहने के बाद इन पेड़ों में से नए कल्ले निकलने शुरू हो गए। इस तरह दो-तीन वर्षों तक कटे पेड़ों की रक्षा करने पर बहुत उत्साहवर्धक परिणाम मिले हैं। यह प्रयास छः वर्षों तक चला।

इस तरह के अनेक सफल प्रयासों में सामान्य बात यह रही है कि यह गांव-समुदायों की एकता और आपसी सहयोग तथा सामूहिक प्रयास से संभव हुए हैं। इस तरह के प्रयासों को यदि सरकारी स्तर पर प्रोत्साहन मिले तो ऐसे उत्साहवर्धक परिणाम व्यापक स्तर पर भी प्राप्त हो सकते हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***